मानस मनीषा

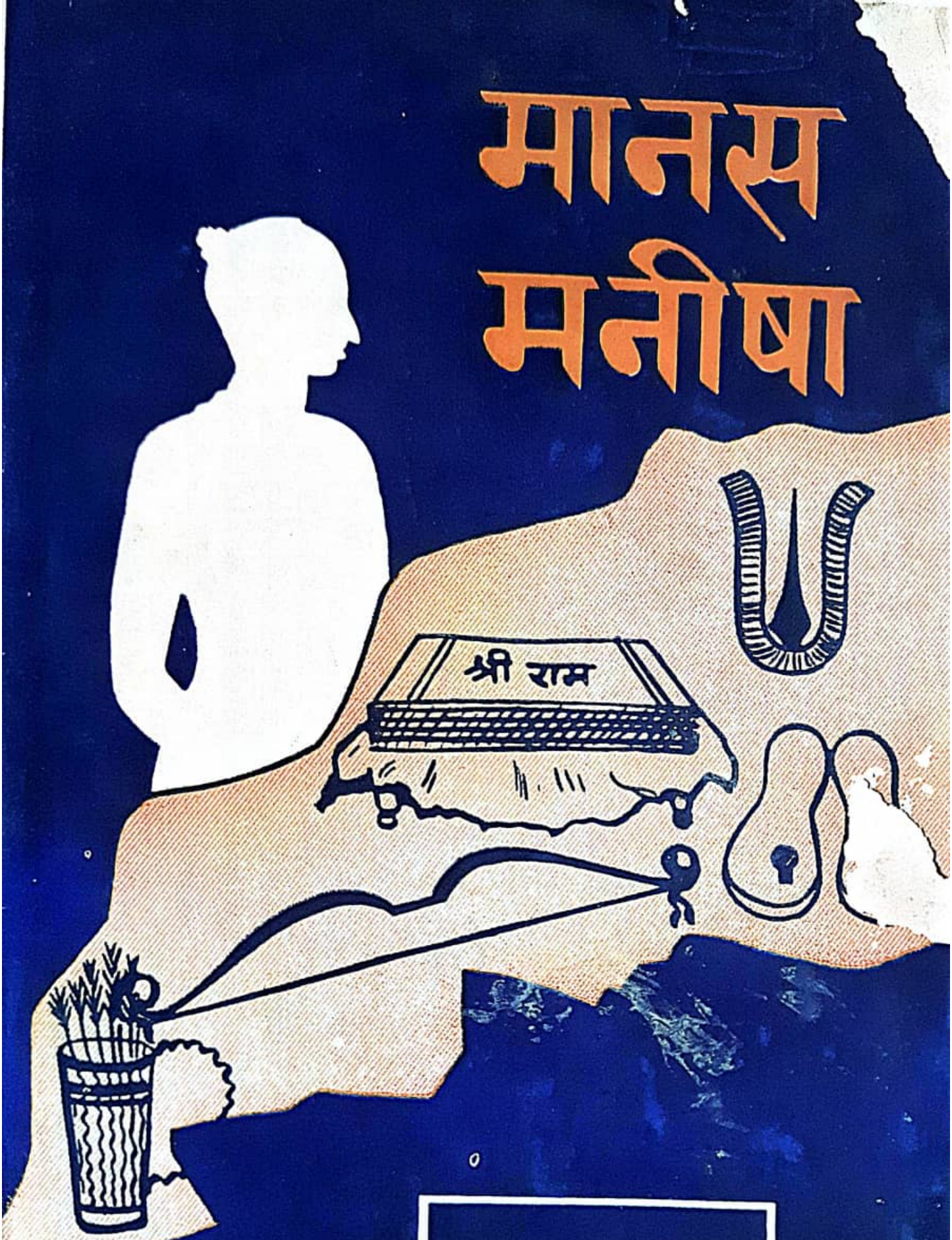

मानस
चतुःशताब्दी
समिति

[illegible]

सम्पादक

डॉ० [illegible]

[illegible]

☆

प्रधान सम्पादक

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

★

प्रकाशक

[मानस चतुश्शताब्दी समिति, टीकमगढ़ की ओर से]

कला-परिषद, टीकमगढ़

द्वारा प्रकाशित

★

सहयोगी-सम्पादक :

° कृष्णकिशोर द्विवेदी

° डी० के० आर्य I. P. S.

° सूर्य प्रसाद श्रीवास्तव

° कपिल देव तैलंग

° एस० जे० शिन्दे

★

सर्वाधिकार –
कला–परिषद, टीकमगढ़

★

प्रथम संस्करण :
रामनवमी, १९७५
५०० प्रतियां
मूल्य-१०)

★

मुद्रक –
हरगोविन्द त्रिपाठी 'पुष्प'
राधा माधव प्रिंटिंग प्रेस, टीकमगढ़

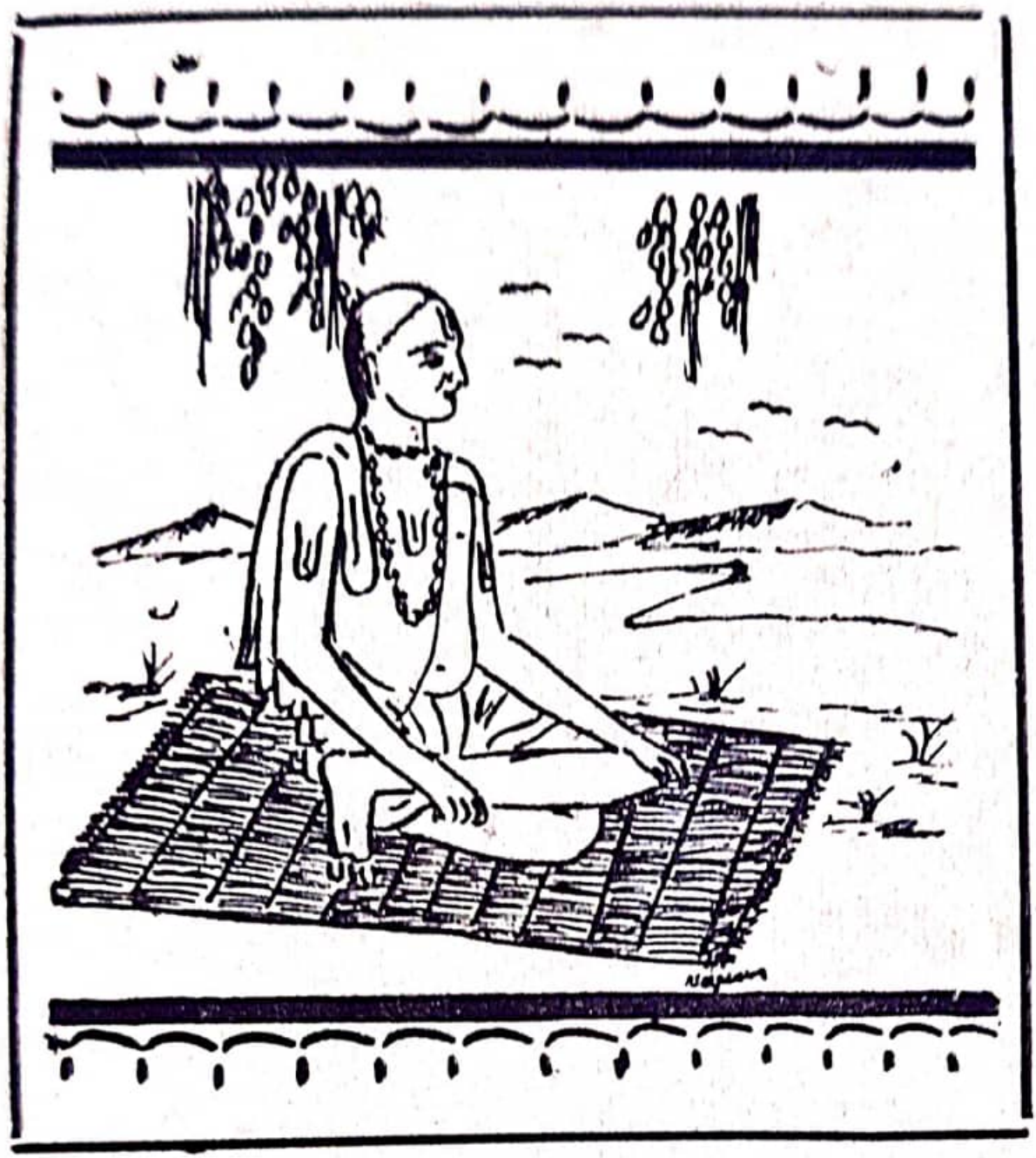

चरणों में

सादर समर्पित

* अनुक्रमणिका *

			पृष्ठ
१—गोस्वामी जी का राज-दर्शन	....	डा० भगीरथ मिश्र	१
२—मानस में निरूपित माया	....	डा० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	११
३ रामकथा: मनुष्य शक्ति की कहानी	....	डा० युगेश्वर	१८
४—तुलसी की विद्रोही चेतना का प्रश्न	....	डा० प्रेमशंकर	२५
५—समन्वयीवृत्ति के सदर्भ में मानस का साधनात्मक पक्ष	....	डा० राममूर्ति त्रिपाठी	३४
६—तुलसीदास के मानस के पुनर्मूल्यांकन की समस्यायें	....	डा० विद्यानिवास मिश्र	४५
७—वनवास गाथा: उत्तराधिकार का औचित्य	....	डा० सुरेशकुमार वर्मा	५०
८—मानस की रचना का उद्देश्य	....	डा० कृष्णचन्द्र वर्मा	५५
९—प्रेषणीयता: शाश्वत प्रश्न और मानस	....	डा० छविनाथ तिवारी	६५
१०—क्षितिजल पावक गगन समीरा	....	डा० कमलाप्रसाद पाण्डेय	८४
११—मानस की मान्यतायें और आधुनिक परिवेश	....	डा० परमलाल गुप्त	९२
१२—कृत्तिवासी बंगला रामायण और मानस	....	डा० रमानाथ त्रिपाठी	९७
१३—कवि तुलसी का वर्णन कौशल	....	डा० त्रिलोचन पाण्डेय	१११
१४—मानस में अवरेब और जातितत्व	....	डा० कृष्णदत्त अवस्थी	११८
१५—मानस में युग सापेक्ष नैतिकतत्व	....	डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त	१२३
१६—तुलसी के मानस में हनुमत्दूत	....	डा० ओमप्रकाश त्रिवेदी	१३३
१७—तुलसी के राम	....	डा० यतीन्द्र तिवारी	१३८
१८—तुलसी की आत्माभिव्यक्ति	....	डा० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'	१४१
१९—गोस्वामी तुलसीदास का जन्म-स्थल	....	पं० गौरीशंकर द्विवेदी	१४६
२०—मानस में लोक-मान्यतायें	....	पं० कपिलदेव तैलंग	१४९
२१—मानस के हनुमान	....	प्रो० प्रमोद वर्मा	१५३
—लेखक-परिचय			१५७

अध्यक्षीय—

हम 'मानस' की ४०० वीं जयन्ती मना रहे हैं। इतनी लम्बी अवधि के पश्चात् भी 'मानस' और उसके सन्देश जीवंत हैं। सन्त तुलसीदास कवि के साथ-साथ द्रष्टा भी थे। उन्होंने यह अमर गाथा अपनी लेखनी से तब लिखी थी जब समाज एक संकटमय संघर्ष से गुजर रहा था। मानव द्विविधा में था, सामाजिक मूल्यों में अस्थिरता थी। सर्वत्र भ्रम का अन्धेरा छाया हुआ था।

'मानस' की 'मनीषा' थी कि वह परिस्थितियों का गूढ़ अध्ययन तथा भविष्य की कल्पना करते हुए शाश्वत सामाजिक मूल्यों में स्थिरता लावे, दलित प्रताड़ित वर्ग के लिए जनसमुदाय में करुणा की भावना, तथा अत्याचारी शक्तियों के दमन की प्रेरणा दे। यह मौलिक सन्देश विश्व में सदैव चिरस्थायी रहेंगे। यह 'मानस' की 'मनीषा' सफल रही और 'मानस' अमर हो गया।

इस योजना का श्री गणेश श्री अरुण गुप्त, भूतपूर्व जिलाध्यक्ष द्वारा हुआ था। इसको पूर्ण करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।

'मानस मनीषा' सन्त तुलसीदास के चरणों में अत्यन्त आदरपूर्वक समर्पित करते हुए जनता जर्नादन के समक्ष मानस चतुश्शताब्दी समारोह समापन तथा केशव-जयन्ती के दिन भेंट करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष है। यदि हम इस अल्प प्रयास से जनता के प्रति प्रेम, दलित वर्ग के लिए सहानुभूति तथा अत्याचारों के लिए संघर्ष की प्रेरणा समाज को दे सकें तो हम अपने प्रयास सफल मानेंगे।

— डॉ० कृ० मु० भवरासकर

सम्पादकीय—

मानस चतुश्शताब्दी समारोह देश में ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण विश्व के अधिकांश देशों में बड़े उत्साह से मनाया गया। उसका कारण यही है कि तुलसी-कृत 'मानस' में विश्व-मानवता को नवीन जीवन-चेतना देने की क्षमता आज भी विद्यमान है। साथ ही उसके शाश्वत मूल्य अस्वीकारे नहीं जा सकते।

नए जीवन-सन्दर्भ में 'मानस' के मूल्यांकन व महत्व-प्रतिपादन के लिए राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर समितियां गठित की गयी। टीकमगढ़ जिला मानस चतुश्शताब्दी समिति प्रादेशिक समिति की एक इकाई ही कही जावेगी। इस समिति ने अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। समिति के पूर्व अध्यक्ष जिलाध्यक्ष श्री अरुण कुमार गुप्त की बड़ी इच्छा थी कि मानस सम्बन्धी त्रिदिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया जाय जिसमें देश के अधिकारी विद्वान 'मानस' पर नए जीवन-मूल्य-सन्दर्भों में चर्चा करें तथा एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित किया जावे।

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से गोष्ठी का आयोजन नहीं किया जा सका। हमारे नए अध्यक्ष जिलाध्यक्ष डा० कृष्णा मुकुन्द भवरासकर ने अपना पूर्ण संरक्षण एवं सहयोग प्रदान किया, फलतः यह ग्रन्थ इस रूप में प्रकाशित किया जा सका। हम जितना बड़ा और जिस रूप में ग्रन्थ देना चाहते थे वह हमारी सीमाओं के कारण सम्भव न हो सका, जिसका हमें खेद है। फिर भी, यह छोटा पुष्प गोस्वामी जी के चरणों में समर्पित है।

अशुद्धियाँ और त्रुटियाँ इसमें अनेक हैं— इसे हम स्वीकार करते हैं। किन्तु यह साधनों की सीमाबद्ध अनिवार्यता भी है। इस कार्य में जिन लेखकों और साथियों का सहयोग मिला उनके हम आभारी हैं।

यह ग्रन्थ टीकमगढ़ जिला मानस चतुश्शताब्दी समिति की ओर से कला परिषद, टीकमगढ़ द्वारा प्रकाशित किया गया है। एक बार पुनः हम जिलाध्यक्ष महोदय का आभार मानते हुए, संचालक, सूचना प्रसारण संचालनालय, मध्य-प्रदेश के भी कृतज्ञ हैं जिनके उदार सहयोग से यह संकल्प पूरा हो सका। अन्त में हम राधा माधव प्रिंटिंग प्रेस के व्यवस्थापक श्री 'पुष्प' एवं उनके समस्त सहयोगियों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने बहुत कम समय में इसका मुद्रण सम्पन्न किया।

गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

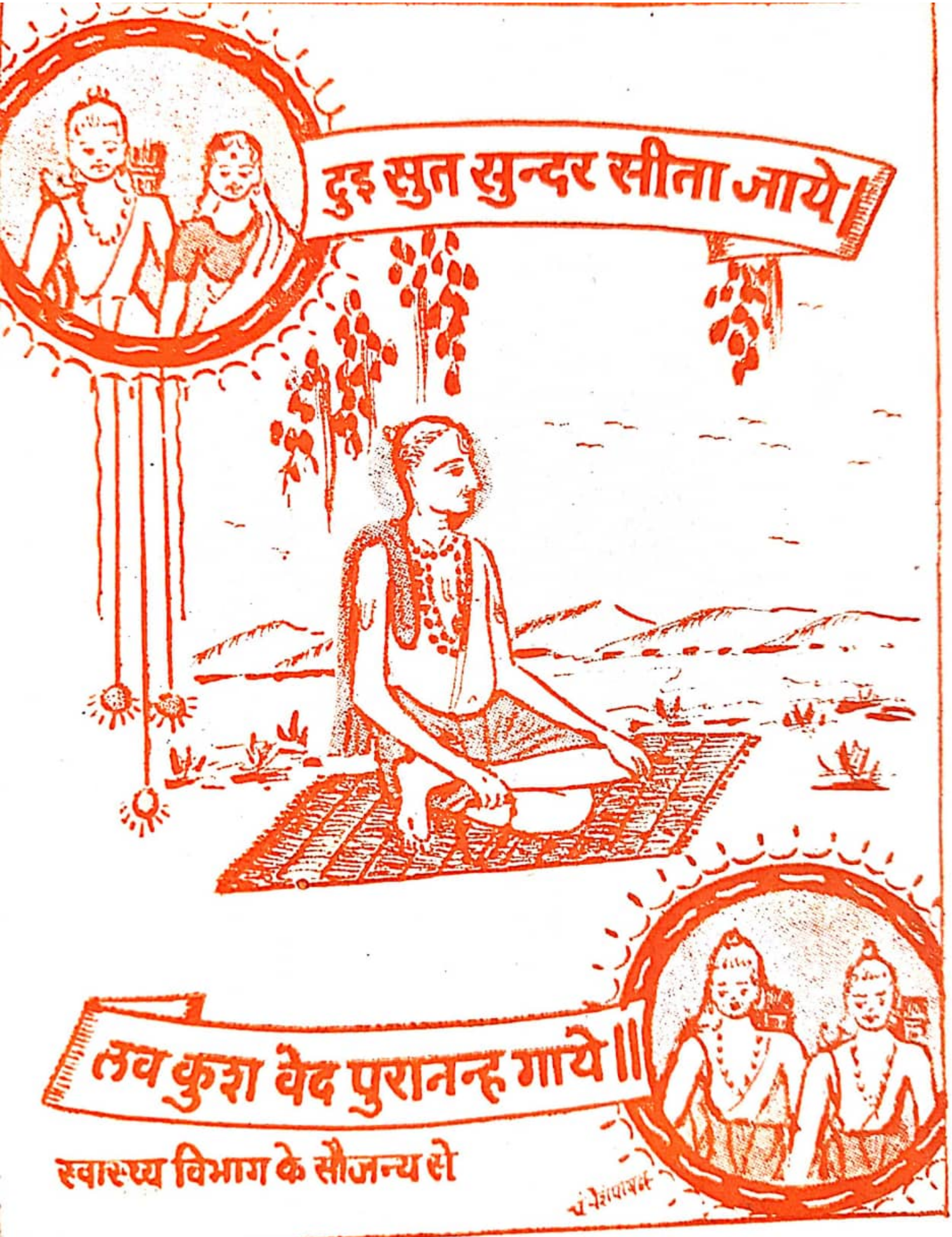

स्वास्थ्य विभाग के सौजन्य से

बूंद बूंद जल सागर भरहीं

अल्प-बचत के सौजन्य से